



SNBP International & Senior Secondary School, Chikhali, Pune.

Affiliation No. 1130703

Academic session 2024-25

Class Notes

NAME: _____

CLASS 7 DIV : _____

Prepared By: Suman Yadav

Prepared date - 5/12/2024

SUBJECT: HINDI

LS.10 - नीलकंठ

Given date -

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-अभ्यास (निबंध से)

शब्दार्थ: तथ्य - बात । शावक- बच्चा, संकीर्ण-संकरा, छोटा। बारहा- बार-बार। मुनासिब- उचित। दुर्बलता- कमजोरी। गुप्तावास- वह स्थान जिसका पता ना हो वहाँ छिप जाना। शोध- खोज। अनाधिकार- बिना अधिकार के। चेष्टा- इच्छा। मार्जरी- मादा बिल्ली। असह्य- जो सहा न जा सके। सर्वथा- हमेशा। नवागंतुको- नए आये हुए। काया कल्प- पूर्ण परिवर्तन। रंग से भरा- रंगमय। भंगिमा- मुद्रा। सहचारिणी- साथ चलने वाली। आर्त कंदन- दर्द से भरी आवाज में रोना। कर्णवेध संस्कार- कान छेदने की रस्म। दंड विधान- दंड देने का कानून। निष्पेष्ट- बिना प्रयास के। मंद- धीमा। सारांश - संक्षेप में। कुब्जा - कुबड़ी स्त्री। स्तबक- फूलों का गुच्छा। मेघाच्छन्न - बादलों से भरा। दुकेली- जो अकेली न हो।

प्रश्न 1. मोर-मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गए?

उत्तर- मोर की गर्दन नीली थी, इसलिए उसका नाम नीलकंठ रखा गया जबकि मोरनी मोर के साथ-साथ रहती थी अतः उसका नाम राधा रखा गया।

प्रश्न 2. जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ?

उत्तर- मोर के शावकों को जब जाली के बड़े घर में पहुँचाया गया तो दोनों का स्वागत ऐसे किया गया जैसे नव वधू के आगमन पर किया जाता था। लक्का कबूतर नाचना छोड़ उनके चारों ओर घूम-घूमकर गुटरगूं-गुटरगूं करने लगा, बड़े खरगोश गंभीर भाव से कतार में बैठकर उन्हें देखने लगे। छोटे खरगोश उनके आसपास उछल-कूद मचाने लगे। तोते एक आँख बंद करके उन्हें देखने लगते हैं।

प्रश्न 3. लेखिका को नीलकंठ की कौन-कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थीं?

उत्तर- नीलकंठ देखने में बहुत सुंदर था वैसे तो उसकी हर चेष्टा ही अपने आप में आकर्षक थी लेकिन महादेवी को निम्न चेष्टाएँ अत्यधिक भाती थीं।

विशेष भंगिमा के साथ गर्दन नीची कर दाना चुगना। गर्दन को टेढ़ी करके शब्द सुनना।

मेघों की गर्जन ताल पर उसका इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर तन्मय नृत्य करना। महादेवी के हाथों से हौले-हौले चने उठाकर खाना।

प्रश्न 4. इस आनंदोत्सव की रागिणी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा-वाक्य किस घटना की ओर संकेत कर रहा है?

उत्तर- इस आनंदोत्सव में की रागिणी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह वाक्य उस घटना की ओर संकेत कर रहा है जब लेखिका ने बड़े मियाँ से एक अधमरी मोरनी खरीदी और उसे घर ले गई। उसका नाम कुब्जा रखा। उसे नीलकंठ और राधा का साथ रहना नहीं भाया। वह नीलकंठ के साथ रहना चाहती थी जबकि नीलकंठ उससे

दूर भागता था। कुब्जा ने राधा के अंडे तोड़कर बिखेर दिए। इससे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया क्योंकि राधा से दूरी बढ़ गई थी। कुब्जा ने नीलकंठ के शांतिपूर्ण जीवन में ऐसा कोलाहल मचाया कि बेचारे नीलकंठ का अंत ही हो गया।

प्रश्न 5. वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय क्यों हो जाता था?

उत्तर- जब वसंत ऋतु में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे और अशोक के वृक्ष नए पत्तों में बँक जाते थे तब नीलकंठ जालीघर में अस्थिर हो जाता था। वह वसंत ऋतु में किसी घर में बंदी होकर नहीं रह सकता था उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे। तब उसे बाहर छोड़ देना पड़ता था।

प्रश्न 6. जालीघर में रहनेवाले सभी जीव एक-दूसरे के मित्र बन गए थे, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया?

उत्तर- जालीघर में रहनेवाले सभी जीव-जंतु एक-दूसरे के मित्र बन गए, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव नहीं हो पाया, क्योंकि कुब्जा किसी से मित्रता करना नहीं चाहती थी। वह सबसे लड़ती रहती थी, उसे केवल नीलकंठ के साथ रहना पसंद था। वह और किसी को उसके पास नहीं जाने देती थी। किसी को उसके साथ देखते ही वह चोंच से मारना शुरू कर देती थी।

प्रश्न 7. नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से किस तरह बचाया? इस घटना के आधार पर नीलकंठ के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- एक बार एक साँप जालीघर के भीतर आ गया। सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गए, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। साँप ने उसे निगलना चाहा और उसका आधा पिछला शरीर मुँह में दबा लिया। नन्हा खरगोश धीरे-धीरे चीं-चीं कर रहा था। सोए हुए नीलकंठ ने दर्दभरी व्यथा सुनी तो वह अपने पंख समेटता हुआ झूले से नीचे आ गया। अब उसने बहुत सतर्क होकर साँप के फन के पास पंजों से दबाया और फिर अपनी चोंच से इतने प्रहार उस पर किए कि वह अधमरा हो गया और फन की पकड़ ढीली होते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल आया। इस प्रकार नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से बचाया।

इस घटना के आधार पर नीलकंठ के स्वभाव की निम्न विशेषताएँ उभर कर आती हैं-

- **सतर्कता**-जालीघर के ऊँचे झूले पर सोते हुए भी उसे खरगोश की कराह सुनकर यह शक हो गया कि कोई प्राणी कष्ट में है और वह झट से झूले से नीचे उतरा।
- **वीरता**-नीलकंठ वीर प्राणी है। अकेले ही उसने साँप से खरगोश के बच्चे को बचाया और साँप के दो खंड (टुकड़े) करके अपनी वीरता का परिचय दिया।
- **कुशल संरक्षक**-खरगोश को मृत्यु के मुँह से बचाकर उसने सिद्ध कर दिया कि वह कुशल संरक्षक है। उसके संरक्षण में किसी प्राणी को कोई भय न था

भाषा की बात

- प्रश्न 1. 'रूप' शब्द से कुरूप, स्वरूप, बहुरूप आदि शब्द बनते हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों से अन्य शब्द बनाओ-

उत्तर- गंध - सुगंध, दुर्गंध, गंधहीन। रंग - रंगना, रंगीला, नौरंग।
फल - सफल, फलदार, फलित। ज्ञान - अज्ञान, ज्ञानवान, अज्ञानी।

- प्रश्न 2. नीचे दिए गए शब्दों के संधि-विग्रह कीजिए

उत्तर- सिंहासन = सिंह + आसन
मेघाच्छन्न = मेघ + आच्छन्न
नीलाभ = नील + आभ
नवागंतुक = नव + आगंतुक

